अभिरूचि, इच्छाओं तथा क्षमताओं के अनुरूप प्रशिक्षण संस्थाएँ कहाँ स्थित हैं तथा उनमें प्रवेश की प्रक्रिया क्या है? इनके लिए जो निर्देशन दिया जाता है वह स्थापन सेवा के अन्तर्गत ही आते हैं।

नोट्स स्थापन सेवा का अर्थ रोजगार दिलाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु छात्रों को विभिन्न विषयों का चयन करने में सहायता देना है जिससे वह भावी जीवन की तैयारी कर सके।

(2) व्यावसायिक स्थापन सेवा (Vocational Placement Service)

छात्र को उसकी योग्यताओं, अभिरुचियों तथा क्षमताओं के अनुरूप उपयुक्त व्यवसाय या रोजगार में उचित स्थान दिलाने में सहायता देने की क्रियाओं को व्यवसायिक स्थापन सेवा कहते हैं।

मायर्स ने अपनी पुस्तक में यह उत्तरदायित्व विद्यालय का ही बतलाया है कि छात्र को शिक्षा देने के उपरान्त उसे उपयुक्त रोजगार में स्थान दिलाने का कार्य विद्यालय को ही करना चाहिए। इसके प्रमुख रूप अधोलिखित हैं–

(अ) स्थापन सेवा सभी के सहयोग से की जानी चाहिए, जिसमें अध्यापक, निर्देशक, परामर्शदाता, प्राचार्य तथा अन्य संस्थाएँ। इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यवसायों के कर्मचारी भी सहयोग कर सके हैं। रोजगार में स्थापन के निम्नांकित स्वरूप होते हैं।

(1) व्यावसायिक कार्यों का अभिविन्यास, प्रशिक्षण तथा कार्यशाला का आयोजन करना,

(2) विभिन्न व्यवसायों तथा अवसरों से छात्र को जानकारी देना,

(3) छात्रों की योग्यताओं एवं क्षमताओं से रोजगार के लिए आवश्यक क्रियाओं तथा कौशलों से मिलान करना।

(4) छात्र को पूर्ण जानकारी देने के बाद, व्यवसाय का चुनाव वह स्वयं करना चाहिए।

(5) स्थापन के पश्चात् आकलन के लिए अनुगामी क्रियाओं का उपयोग करना चाहिए। रोजगार से सन्तुष्टि का भी पता लगाना चाहिए।

(ब) समाज की माँग एवं पूर्ति से स्थापन करना। स्थानीय समाज की आवश्यकता के अनुसार विद्यालय द्वारा स्थापन सेवाओं का नियोजन करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इस तथ्य को महत्व दिया गया है कि व्यावसायिक शिक्षा में स्थानीय आवश्यकतानुसार ही विद्यालयों द्वारा व्यवस्था करनी चाहिए इस सम्बन्ध में सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है तथा स्थानीय माँग को भी ध्यान में रखते हैं। प्रशिक्षण में इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखा जाता है।

(स) स्थापन सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए छात्रों, अध्यापकों, प्रबन्धकों प्राचार्यो को भागीदारी बनाना चाहिए जिससे इसकी उपयोगिता एवं प्रक्रिया को समझ सके। इसके अतिरिक्त संस्थाओं, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, अभिभावकों तथा परामर्श सेवा का भी उपयोग करना चाहिए। रोजगार सम्बन्धी सूचनाएँ विश्वसनीय होनी चाहिए। योग्य अध्यापकों द्वारा ही स्थापन सेवा का कार्य कराया जाए।

स्थापन सेवाओं की व्यवस्था (Organization of Placement Service)

निर्देशन तथा परामर्श सेवाओं का संगठन भारत में दो स्तरों पर किया जाता है–केन्द्रीय/राष्ट्रीय स्तर पर तथा प्रदेश स्तर। स्थानापन सेवाएँ भी निर्देशन तथा परामर्श कार्यक्रमों का ही एक अंग है इसकी व्यवस्था तीन प्रकार से की जाती है– (1) केन्द्रीय स्तर (2) विकेन्द्रीयकरण तथा (3) मिश्रित स्तर।

भारत में रोजगार तथा व्यवसाय का नियोजन तथा नियन्त्रण दो स्तरों पर किया जाता है। कुछ संस्थाएँ तथा रोजगार का संचालन केन्द्र द्वारा किया जाता है। अधिकांश रोजगार तथा संस्थाओं का संचालन राज्य द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ रोजगार निजी स्तर पर संचालित किए जाते हैं।

जॉन डीवी ने शिक्षा का यही उद्देश्य बताया कि छात्र में सामाजिक तथा व्यावसायिक क्षमताओं का विकास करना जिससे वह समाज में अपना स्थान बना सके इसे उन्होंने सामाजिक प्रभावशीलता का विकास माना है।

(1) शैक्षिक स्थापन (Educational Placement)

डाक्टर बनने के लिए इण्टर में भौतिक, रसायन, जीव विज्ञान तथा वनस्पति विज्ञान जैसे विषयों का अध्ययन आवश्यक होता है। शिक्षक बनने के लिए अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक होता है।

(अ) अध्ययन हेतु पाठ्यक्रमों में स्थापन,

(ब) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में स्थापन तथा

(स) भावी शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम में स्थापन।

(अ) अध्ययन हेतु पाठ्यक्रमों में स्थापन–'मुदालियर आयोग' (1953) के सुझाव के परिणामस्वरूप माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विविध पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं। अत: आठवीं कक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद प्रत्येक बालक या बालकों का एक-सा ही प्रश्न होता हैं, "मैं कौन-से विषयों का अध्ययन करूँ?" ऐसे छात्रों को अध्यापक या परामर्शदाता की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। इनमें कोई भी सहायता कर सकता है, परन्तु सहायता करने वाले को निम्नलिखित तथ्यों से परिचित होना पड़ सकता है।

(1) विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले पाठ्य विषयों की सूची तथा आवश्यकताएँ।

(2) छात्रों द्वारा विचार किए गए कार्य क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण।

(3) उच्च अध्ययन के लिए छात्र को प्रवेश की किन आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी?

छात्र को किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश देते समय निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

(1) प्रवेश प्रक्रिया सरल तथा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए।

(2) छात्र प्रवेश के लिए सक्षम तथा तैयार होना चाहिए।

(3) अध्यापक को किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व परामर्शदाता की भी सहायता लेनी चाहिए।

(4) एक योग्य अध्यापक द्वारा प्रत्येक छात्र के चयन की परख की जानी चाहिए-छात्रों द्वारा विद्यालय के नियमों को गलत समझना तथा गलत चयन के दुष्परिणामों से उनको अवगत करना ही जाँच का उद्देश्य है। इस कार्य के लिए अध्यापक को छात्र सम्बन्धी सूचनाओं का ज्ञान होना चाहिए।

छात्र सम्बन्धी सूचनाओं का स्रोत विश्वसनीय हो तथा सूचनाएँ वैध होनी चाहिए।

(ब) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में स्थापन–नियमित पाठ्यक्रमों से छात्रों का मानसिक विकास होता है जबकि शिक्षा द्वारा सर्वांगीण विकास की अपेक्षा की जाती है। इसलिए सामाजिक तथा शारीरिक विकास के लिए पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में भी स्थापन करना आवश्यक होता है। विद्यालय में खेल-कूद तथा क्रियाओं की भी व्यवस्था की जाती है।

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की परिस्थिति नियमित कक्षागत क्रियाओं से भिन्न होती है। इन परिस्थितियों में छात्र अधिक सीखता है। इन क्रियाओं के चयन हेतु भी छात्रों को निर्देशन की आवश्यकता होती है। छात्र को उसकी रूचियों तथा क्षमताओं के अनुरूप ही इनका चयन करना उपयुक्त होता है। जैसे कुछ छात्रों को सामाजिक कार्यों में अधिक रूचि होती है तथा नेतृत्व के गुण होते हैं तथा अन्य क्षेत्रों में खेलकूद में अधिक रूचि होती है। दक्षता के लिए निर्देशन आवश्यक होता है।

(स) भावी शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम में स्थापन–आठवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद विषयों के चयन के लिए निर्देशन की आवश्यता होती है और इण्टर परीक्षा पास करने के बाद अनेक प्रशिक्षण विद्यालयों में प्रवेश के अवसर होते हैं। परन्तु छात्रों को इनका ज्ञान नहीं होता है तथा जानकारी होने पर निश्चित नहीं कर पाते कि किस प्रशिक्षण में प्रवेश लिया जाए जिसमें जीवन में स्थान पाकर सफल हो सकें। यह उत्तरदायित्व भी स्थापन सेवा का है। उनकी

(2) छात्र को विद्यालय में उन्हीं विषयों का अध्ययन करना चाहिए तथा तैयारी करनी चाहिए जो उसके भावी कार्यक्रम में सहायक हों।

(3) स्थापन सेवा से व्यावसायिक तथा शैक्षिक कार्यप्रणाली सम्बन्धी समायोजन की समस्याओं को कम किया जा सकता है।

(4) स्थापन सेवा समाज को भी प्रभावित करती है। जब छात्रों की नियुक्ति सन्तोषप्रद होती है तो उनका समाज के आर्थिक पक्ष पर सीधा प्रभाव पड़ता है उचित जीविका में प्रवेश करने पर समाज की आय में वृद्धि होती है। अपनी रुचि एवं योग्यतानुसार जीविका प्राप्त होने पर उनका समायोजन सन्तोषजनक होता है। ऐसे व्यक्ति अपने कार्य में अधिक प्रवीण भी होते हैं जिनका उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है।

(5) स्थापन सेवाएँ विद्यालय का सम्मान समाज में बढ़ाती हैं। प्राय: यह देखा जाता है कि विद्यालय छोड़ने के बाद उसके छात्र क्या करते हैं, किस प्रकार की जीविकाओं में नियुक्ति पाते हैं जो छात्र निर्देशन के समय निश्चित की गई योजना के अनुसार कार्य करने में प्रवेश पाते हैं तो उनकी प्रगति भी शीघ्रता से होती है। तीव्र प्रगति करने वाले छात्र विद्यालय की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं।

(6) विद्यालयों की स्थापन सेवाओं से नियुक्तिकर्ता को भी लाभ रहता है। विभिन्न जीविकाओं में स्थान रिक्त होने पर नियुक्तिकर्ता भी योग्य अभ्यर्थी को इन सेवाओं के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए सेवा अधिकारी तथा नियुक्तिकर्ता का परस्पर सहयोग आवश्यक है।

(7) स्थापन सेवा द्वारा प्रबन्धन व्यवस्था को प्रभावशाली बनाया जाता है ऐसे छात्रों एवं व्यक्तियों की नियुक्तियाँ की जाती है जो वास्तव में उस स्थान के लिए अधिक उपयुक्त है। जब व्यक्ति को रोजगार से सन्तुष्टि नहीं होती हैं तब वह संस्था में समस्याएँ उत्पन्न करता है।

(8) भिन्न-भिन्न संस्थाओं में कार्यकर्ताओं की माँग एवं पूर्ति में सन्तुलन रखने के दृष्टि से स्थापन सेवा का विशेष महत्व है।

(9) महत्वपूर्ण अध्ययनों तथा शोध कार्यों को बढ़ावा देने की दृष्टि से स्थापन सेवाओं का अधिक महत्व है। क्योंकि स्थापन सेवाओं की प्रभावशीलता का आकलन अनुगामी कार्यक्रमों से करना आवश्यक होता है।

(10) नवयुवक छात्र रोजगार के ढूँढ़ने से अधिक कठिनाई का अनुभव करते हैं। भारत में आजकल ऐसी ही परिस्थितियाँ हैं। यहाँ के छात्र अध्ययन समाप्ति पर उचित जीविका में प्रवेश प्राप्त नहीं कर पाते हैं। स्थापन सेवा उन जीविकाओं के बारे में बताती हैं जिनमें रिक्त स्थान होते हैं।

स्थापन सेवा के प्रकार (Types of Placement Service)

साधारणत: स्थापन सेवाएँ तीन प्रकार की होती हैं–

(1) शैक्षिक स्थापन (Education Placement),

(2) व्यावसायिक स्थापन (Vocational Placement) तथा

(3) प्रशिक्षण स्थापन (Training Placement)

जार्ज ई. मायर्स का विचार है कि छात्र को किसी व्यवसाय में स्थान दिलाने के उत्तरदायित्व विद्यालय का ही है। जैसा उनका कथन है–

"एक नवयुवक को विद्यालय से व्यावसयिक क्रियाओं में भेजना शैक्षिक सेवा है, अत: समाज द्वारा चुनी हुई शैक्षिक संस्था-विद्यालय का ही यह एक मुख्य कार्य है।"

"The transfer of youth from school to occupational activities is an educational service and thus is a proper function of society's chosen educational agency, the school system."

जिससे वह सुगमता से समायोजन करके उसमें सफल हो सके। अनेक विद्वानों द्वारा स्थापन सेवा की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ यहाँ दी गई हैं–

किलफोर्ड पी. फ्री. क्लिके अनुसार–"स्थापन सेवा का सम्बन्ध छात्र को अगले कार्य या पद के लिए सहायता देना, चाहे वह किसी व्यवसाय, स्थान या पद ले सके या शिक्षा संस्था में उपयुक्त पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में स्थान पा सकें।"

60/324

"Placement is concerned with helping pupils take the next step, whatever ... placement service assists pupils in finding jobs, it also helps them to find ... appropriate extra-curricular activities."

–Clifford, P. Forchlich

एण्ड्र तथा विले के अनुसार–"स्थापन सेवा उन सभी क्रियाओं की ओर अग्रसरित करती है, जो छात्र को उसकी जीविका हेतु व्यवसाय या रोजगार अथवा शैक्षिक क्रियाओं या शैक्षिक में प्रवेश के लिए सहायता की जाती है या निर्देशन दिया जाता है जिससे वह उसमें पर्याप्त समायोजन करके सफल हो सके।"

"Placement refers to all of the activities performed in assisting the student to make an adequate adjustment to the next step in his training whether that he is taking a full or part time job or making a choice of additional educational training."

–Andrew and Willyey

स्थापन सेवा का सम्बन्ध व्यवसायिक निर्देशन से अधिक है, परन्तु इससे भिन्न है। छात्र की भावी योजनाओं तथा कार्यक्रमों में सहायता दी जाती है। इन परिभाषाओं में 'स्थापन सेवा' की निम्नांकित विशेषताओं का उल्लेख किया गया है–

(1) स्थापन सेवा छात्र की भावी योजना अथवा कार्यक्रम में सहायता देना है। यह भावी योजना प्रमुख रूप से तीन प्रकार की है–
   (अ) किसी व्यवसाय या रोजगार में स्थान ग्रहण करने में।
   (ब) विद्यालय में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में स्थान लेने में, तथा
   (स) किसी शैक्षिक या व्यावसायिक प्रशिक्षण में प्रवेश लेने में।

(2) स्थापन सेवा से स्थान ग्रहण कर लेने या प्रशिक्षण में प्रवेश लेने के उपरान्त उसमें पर्याप्त समायोजन करें।

(3) स्थापन सेवा से उस व्यवसाय या प्रशिक्षण में सफल हों।

(4) स्थापन सेवा से छात्र को उस व्यवसाय अथवा प्रशिक्षण से सन्तुष्टि भी हो सके।

स्थापन सेवा की परिभाषा तथा विशेषताओं से प्रगट होता है कि शैक्षिक निर्देशन तथा व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं और स्थापन सेवा के विशेषणों तथा कार्यकर्ताओं में सहयोग तथा समन्वय होना आवश्यक है क्योंकि यह सेवाएँ एक दूसरे की पूरक है। अनुगामी सेवा से इनकी प्रभावशीलता तथा सार्थकता का आकलन किया जाता है।

क्या आप जानते हैं किसी व्यवसाय के प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपयुक्त स्थान दिलाने की प्रक्रिया को स्थापन सेवा कहा जाता है।

स्थापन सेवा की आवश्यकता एवं महत्त्व (Needs and Importance of Placement Services)

उपरोक्त परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि स्थापन सेवा की आवश्यकता शैक्षिक तथा व्यावसायिक दोनों प्रकार के निर्देशन में है। यहाँ स्थापन सेवा की आवश्यकता एवं महत्त्व को बताया गया है–

(1) स्थापन सेवा से छात्र को यह बोध हो जाता है कि उसकी योग्यताएँ एवं क्षमताएँ किस कार्य के लिए उपयुक्त है जिनमें वह अधिक सफल हो सकेगा और पर्याप्त समायोजन भी कर सकेगा।

5.1 स्थापन सेवा (Placement Service)

व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के उपरान्त व्यवसाय ढूंढना नहीं पड़ता अपितु उसका स्थापन पाठ्यक्रम से सुनिश्चित हो जाता है इसलिए आज व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु भारी भीड़ है। इसके लिए निम्नांकित सेवाओं का विशेष महत्व है–

1. स्थापन सेवा (Placement Service)
2. अनुगामी सेवा (Follow-up Service), तथा
3. शोध सेवा (Research Service)।

व्यावसायिक निर्देशन से छात्रों की योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुरूप ही स्थापन के लिए सुझाव तथा निर्देशन दिया जाता है। परन्तु शिक्षा संस्थाओं का यह उत्तरदायित्व नहीं होता है कि शिक्षाप्राप्त छात्र को कहाँ और किस व्यवसाय में स्थान दिया जाये। छात्र स्वयं स्थापन के लिए प्रयास करता है।

स्थापन सेवा का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Placement Service)

स्थापन सेवा का अर्थ होता है कि छात्र की योग्यताओं, क्षमताओं तथा गुणों के अनुसार उपयुक्त स्थान दिलाया जाये